# सृजन समूह – एक प्रधानाध्यापक के अनुभव

धर्मपाल गंगवार

शिक्षकों के क्षमता संवर्धन के लिए शिक्षक प्रशिक्षण में अक्सर बात होती है। लेकिन ऐसे प्रशिक्षणों की अपनी सीमाएँ हैं। ये औपचारिक प्रशिक्षण समय की सीमा में बँधे होते हैं। इनमें शिक्षक की रुचियों एवं आवश्यकताओं की भी अनदेखी की जाती है जिससे शिक्षक के लिए ये आम तौर पर उतने रुचिकर नहीं होते हैं। इन सेवारत प्रशिक्षणों में यदि थोड़ी बहुत सैद्धान्तिक समझ बनती भी है तो उस पर फीडबैक नहीं मिल पाते, चर्चा नहीं हो पाती जिससे समझ अधूरी रहती है। सेवारत शिक्षण प्रशिक्षण में निरन्तरता भी नहीं होती है, जबकि शैक्षिक मुद्दों को समझने के लिए लगातार पठन-पाठन एवं चर्चा ज़रूरी होते हैं। शैक्षिक मुद्दों को बेहतर ढंग से समझने के लिए शिक्षकों के बीच ज़िले एवं ब्लॉक स्तर पर सीखने के अनौपचारिक माहौल की आवश्यकता महसूस होती है जहाँ शिक्षक स्वतंत्र रूप से शैक्षिक मुद्दों को समझने के लिए लगातार चर्चा कर सकें।

इसी सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए जनपद उधम सिंह नगर में अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन द्वारा ऑनलाइन समूह के माध्यम से बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया गया है। 24 मार्च 2020 को अचानक हुए लॉकडाउन ने जीवन में उथल-पुथल मचा दी, अचानक सब कुछ बन्द हो गया - केजी से पीजी तक सभी शिक्षण संस्थान बन्द हो गए, जीवन असहज हो गया। तब अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन ने क्षमता संवर्धन हेतु जो कार्य शुरू किया, वह आज भी जारी है। आपस में पढ़ने-लिखने का माहौल बनाने के लिए शिक्षकों के ऑनलाइन समूह ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अन्तर्गत शिक्षकों को शिक्षा से जुड़ी हुई अत्यन्त गुणवत्तापूर्ण सामग्री पढ़ने को मिली और उस पर लगातार चर्चा भी की गई।

इस समूह में शैक्षिक लेख, कहानियों तथा अन्य सामग्री का चुनाव बहुत ही सूझबूझ से किया जाता है। यह सभी सामग्री हमारी शिक्षण प्रक्रिया से कहीं-न-कहीं जुड़ती है। सामूहिक चर्चा के दौरान समझ में आता है कि यह हमारे कक्षा-शिक्षण के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह कहना बहुत मुश्किल है कि कौन-सी कहानी अथवा लेख सबसे अच्छा लगा। लेकिन फिर भी रमेश थानवी

का लेख 'शिक्षक पढ़ेगा नहीं तो बढ़ेगा नहीं', निमरत खंदपुर का लेख 'क्या शिक्षक पेशेवर है', उमा अय्यर का लेख 'लोग और उनके सोचने-समझने के तरीके', कुमकुम रॉय का लेख 'राष्ट्र और राष्ट्रवाद', माधव केलकर का लेख 'क्यों पढ़ाते थे वैसे', सुशील जोशी का लेख 'परीक्षा न हो तो क्या तुम सीखोगे-पढ़ोगे नहीं?', सी.एन. सुब्रह्मण्यम का लेख 'फेल न किया तो क्या किया?' कमल महेंद्रू का लेख 'अच्छे शिक्षक के मायने', रेवा यूनुस का लेख 'क्या बचपन का सिर्फ एक ही मतलब हो सकता है?' तथा धर्मवीर भारती के लेख 'मेरा छोटा-सा निजी पुस्तकालय' ने बहुत अधिक प्रभावित किया एवं कक्षा शिक्षण में मदद की है। ये सारे लेख कक्षा शिक्षण की समझ विकसित करने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

इन लेखों के साथ-साथ शिक्षा जगत की कोर किताबें *पढ़ना ज़रा सोचना, तोत्तोचान, दिवास्वप्न, कठिन है माता-पिता बनना, बच्चे की भाषा और अध्यापक - एक निर्देशिका, राज समाज और शिक्षा, पूड़ियों की गठरी, मैं इस तरह नहीं पढ़ूँगी, असफल स्कूल, शिक्षा के सरोकार* जैसी पुस्तकें पढ़ीं और उन पर बात की गई। कृष्ण कुमार जी की किताब *पढ़ना ज़रा सोचना,* अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन द्वारा सृजन समूह के सभी शिक्षकों को शिक्षक दिवस पर तोहफे में दी गई। यह शिक्षा जगत की बहुत ही महत्वपूर्ण किताब है। इस किताब के सातों अध्याय पढ़कर सामूहिक चर्चा के द्वारा समझ बनाई गई। शिक्षा सम्बन्धी सैकड़ों आलेख तथा किताबें पढ़ने के बाद विद्यालय में शैक्षिक माहौल बनाने में बहुत मदद मिली है।

## कौन-सा माहौल किसका ज़िम्मा?

प्रधानाध्यापक का दायित्व है कि वह अपने विद्यालय एवं सेवित बस्ती में पढ़ने-लिखने का माहौल तैयार करें। कोरोना काल पढ़ने-लिखने का माहौल बनाने के सन्दर्भ में बहुत ही चुनौतीपूर्ण समय रहा है क्योंकि बच्चों की ध्यान लगाने की क्षमता घट गई है, वे एक विषय पर अधिक देर तक केन्द्रित नहीं रह पाते हैं। हमारा विद्यालय ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है जहाँ की अधिकतर आबादी निरक्षर है। घरों में पढ़ने-लिखने का माहौल नहीं है। *पढ़ना ज़रा सोचना* किताब पढ़कर ही मुझे समझ आया कि प्रधानाध्यापक होने के नाते मुझे ही गाँव में पढ़ने-लिखने का माहौल बनाने की ज़रूरत है। इसके लिए कोरोना काल के दौरान सामुदायिक पुस्तकालय शुरू किया गया। इस सामुदायिक पुस्तकालय में स्कूल के पुराने छात्र जो अब इंटर या हाई स्कूल कर रहे थे, उनके साथ-साथ स्कूल के बच्चे भी जुड़े। यह सामुदायिक पुस्तकालय *ज्ञान विज्ञान समिति* की किताबों, *चकमक, संदर्भ*

तथा *साइकिल* जैसी पत्रिकाओं एवं स्कूल के पुस्तकालय में उपलब्ध बाल साहित्य से शुरू किया गया।

मैं प्रत्येक रविवार को गाँव में जाता और पाठकों से पढ़ी हुई किताबों पर चर्चा करता। एक कहानी सभी के सम्मुख पढ़कर हम उस पर चर्चा करते हैं। बच्चे कहते हैं कि इन किताबों में बहुत मज़ा आता है। कोविड काल में शैक्षिक माहौल बनाने के लिए यह बहुत ही नायाब प्रयोग रहा है। कुछ बड़े बच्चों ने *निर्मला, गबन, फेरा, लज्जा, अग्नि की उड़ान, एक था मोहन, गे नेक, टॉलस्टॉय की कहानियाँ तथा प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानियाँ* जैसी किताबें भी पढ़ी हैं। जब बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित हो जाती है तो वे बड़ी किताबें भी पढ़ने लगते हैं। कक्षा-5 की आयशा ने शिक्षा जगत की प्रसिद्ध पुस्तक *पहला अध्यापक* पढ़ी है। ये बच्चे नियमित पाठक बन गए हैं। आसपास के गाँवों में भी इस सामुदायिक पुस्तकालय की चर्चा हो रही है। आज भी बच्चे पुस्तकालय से किताबें ले जाते हैं। कोरोना काल में बच्चों के सीखने एवं पढ़ने की रुचि बनाए रखने में पुस्तकालय ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह समझ भी कृष्ण कुमार जी की किताब *पढ़ना ज़रा सोचना* से ही विकसित हुई है।

## बिना योजना कुछ न करना

विद्यालय खुलने पर शिक्षा सम्बन्धी किताबें एवं लेख पढ़ने के उपरान्त बनाई गई समझ के अनुरूप शिक्षण कार्य किया गया। इसके लिए शिक्षण योजना बनाना बहुत ज़रूरी है। बिना योजना के हम प्रभावी शिक्षण नहीं कर सकते। पढ़ाए जाने वाले पाठ का

उद्देश्य क्या है, इस पाठ से बच्चों में क्या सन्देश पहुँचाना है आदि चीज़ें योजना में शामिल रहती हैं। बच्चों को बातचीत के मौके एवं सोचने के अवसर देने वाले प्रश्न पाठ को अर्थपूर्ण बनाते हैं। खुले प्रश्न बच्चों की कल्पनाशीलता को बढ़ाते हैं, स्वतंत्र रूप से सोचने के मौके देते हैं। अनेक छोटी-छोटी कविताओं, कहानियों पर शिक्षण योजना तैयार करके बच्चों को बातचीत के अवसर प्रदान करने से उनकी अभिव्यक्ति की क्षमता धीरे-धीरे बढ़ने लगी। बच्चों के मौखिक भाषा विकास के लिए यह बहुत ज़रूरी है। यह बात शिक्षा जगत एवं भाषा की समझ बनाने के लिए प्रसिद्ध किताब *भाषा का बुनियादी ताना-बाना* में भी कही गई है।

बातचीत किस ढंग से की जाए, कौन-से प्रश्न सोचने के लिए रखे जाएँ, कितने प्रश्न सूचना आधारित हों – इन सब पर सोच-विचार आवश्यक है, साथ ही, धीमी गति से सीखने वाले बच्चों के लिए भी योजना में स्थान होना ज़रूरी है। बातचीत का मतलब ही है कि बच्चों को सोचने के अवसर दिए जाएँ। कुछ रचनात्मक चीज़ें भी शिक्षण योजना में रखना महत्वपूर्ण होता है। योजना बनाते समय सभी बच्चों की सहभागिता पर भी विशेष ध्यान रखने की ज़रूरत होती है। योजना बनाकर पढ़ाने से शिक्षण प्रभावकारी होता है और सीखने का उत्साहवर्धक माहौल बनता है। इस विधि से कार्य करने से कोरोना काल में हुए लर्निंग लॉस की भरपाई करने में बहुत मदद मिली है।

## हमने क्या पाया?

कक्षा में काम करते एवं बच्चों का अवलोकन करते हुए समझ बनी कि

जब बच्चों को सोचने वाले प्रश्न दिए जाते हैं तो वे सोचने की मेहनत करते हैं और अपनी समझ बनाते हैं। एक बार मैं बरखा सीरीज़ की किताब *तोता* पर योजना अनुसार बात कर रहा था। प्रश्न था कि "तोते को चोट कैसे लगी होगी?" सभी बच्चों ने तरह-तरह के उत्तर दिए। जुनैद नाम का बच्चा पूरा दिन सोचता रहा और फिर अगले दिन उसने मुझे आकर बताया कि "तोते को माँझे से चोट लगी होगी।" मैंने पूछा, "तुमने यह कैसे सोचा?" बच्चे ने बताया, "मैं सोचता रहा तभी अचानक मेरे दिमाग में आ गया।" इससे मुझे यह बात समझ में आई कि सोचने के लिए प्रेरित करने वाले प्रश्न कितने महत्वपूर्ण होते हैं। इसी तरह से द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी की कविता 'जी होता चिड़िया बन जाऊँ' पर कार्य कर रहा था। शिक्षण योजना के अनुसार बच्चों से यह प्रश्न पूछा गया कि "चिड़िया कहाँ रहती है?" बच्चों ने उत्तर दिया, "पेड़ पर।"

इसी से जुड़ा हुआ अगला प्रश्न था कि "बताओ, पेड़ पर और कौन-कौन रहता है?" बच्चों ने धीरे-धीरे सोचते हुए जो चीज़ें बताईं, वे आश्चर्यचकित करने वाली थीं। बच्चों द्वारा बताए जीव-जन्तुओं को मैं ब्लैक बोर्ड पर लिखता गया जो इस प्रकार हैं- कबूतर, तोता, कौवा, चिड़िया, मैना, बगुला, साँप, चील, बाज़, बन्दर, मोर, कीड़े-मकोड़े, कोयल, बुलबुल, चींटा-चींटी, गिलहरी, तितली, मधुमक्खी, जुगनू, मकड़ी, भुनगे, हंस, गिरगिट,

उल्लू, चमगादड़, सूड़ी, जोंक, लंबडोर तथा लंगूर। जब बच्चों को पता चलता है कि इतने अधिक प्राणियों का घर पेड़ है, तब जाकर उन्हें समझ में आता है कि पेड़ कितना महत्वपूर्ण तथा ज़रूरी है। तो जब हम कहते हैं कि पढ़ना है समझना, और समझ का विस्तार करना, तो समझ के विस्तार के लिए कार्य योजना बनाने की ज़रूरत होती है। पाठ योजना बनाने की यह समझ सृजन समूह में पढ़ते हुए ही विकसित हुई है।

*पढ़ना ज़रा सोचना* किताब में कृष्ण कुमार जी पढ़ने की घण्टी की बात करते हैं। एक ऐसा समय जो बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने का अवसर देता है। ऐसी जगह पुस्तकालय है जहाँ किसी प्रकार की रोक-टोक नहीं, कोई भी बच्चा किसी किताब को उलट-पुलट सकता है, देख सकता है, पढ़ सकता है। स्वयं पढ़कर सुनाना भी एक बहुत ही उद्देश्यपूर्ण और महत्वपूर्ण गतिविधि है, यह बात कृष्ण कुमार जी ने *बच्चों की भाषा और अध्यापक – एक निर्देशिका* किताब में कही है। सुनते-सुनते बच्चे शब्दों को पकड़ने लगते हैं। किताबों पर बातचीत करने से बच्चे कहानी का पूरा सन्दर्भ समझ लेते हैं, भले ही उन्हें अभी पढ़ना न भी आता हो। बातचीत करने से बच्चों की अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ती है, उनका शब्द भण्डार बढ़ता है और धीरे-धीरे वे कब किताब पढ़ना सीख जाते हैं, पता ही नहीं चलता। ऐसे कई उदाहरण हमारे विद्यालय में हैं।

प्रधानाध्यापक का दायित्व है कि वह अपने सहयोगियों को क्षमता संवर्धन के लिए भी प्रेरित करें। इसके लिए प्रधानाध्यापक को खुद भी लगातार कक्षा में पढ़ाना ज़रूरी है। हमारे सहयोगी भी इसी तरह से शिक्षण कार्य करते हैं, शिक्षक समूह में जुड़कर अपनी क्षमता संवर्धन के लिए प्रयासरत हैं। शिक्षकों के क्षमता संवर्धन के लिए कक्षा शिक्षण पर लगातार बातचीत करना तथा पढ़ते रहना बहुत ज़रूरी है। कृष्ण कुमार तो यहाँ तक कहते हैं कि पढ़ना तो अध्यापक का व्यसन होना चाहिए।

---

**धर्मपाल गंगवार:** प्रधानाध्यापक, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, हल्दीपचपेड़ा, खटीमा, ऊधम सिंह नगर।

**सभी चित्र: स्वाति कुमारी:** बिहार के एक विस्थापित परिवार में जन्मीं स्वाति ने दिल्ली के कॉलेज ऑफ आर्ट से पेंटिंग में बी.एफ.ए. और अंबेडकर यूनिवर्सिटी, दिल्ली से विज़ुअल आर्ट्स में एम.ए. किया है। उनकी खोज इस बात के इर्द-गिर्द घूमती है कि शरीर और स्थान कैसे कार्य करते हैं, प्रतिक्रिया करते हैं, बातचीत करते हैं और एक-दूसरे को प्रतिक्रिया देते हैं।